वैज्ञानिक संगोष्ठी

मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य

भा0वा0अ0शि0प0–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

भा0वा0अ0शि0प0–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश आयुर्वेद विभाग तथा विश्व आयुर्वेद मिशन के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 16.01.2023 को माघमेला क्षेत्र के काली मार्ग पर सेक्टर–4 स्थित राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत **''मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य''** विषय पर एक दिवसीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य आम जनता को मोटे अनाज के विषय में जागरूक कराना था। कार्यक्रम की शुरुआत आयुर्वेद जगत के प्रणेता तथा वैद्यक शास्त्र के देवता भगवान धन्वंतरि की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित करके हुआ।

मुख्य अतिथि डा0 जी0सी0 त्रिपाठी, अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद, उ0प्र0 ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भोजन में खनिज लवण एवं डाइटरी फाइबर की अपर्याप्त मात्रा के कारण ही मधुमेह, एनीमिया, उच्च रक्तचाप, कैल्सियम की कमी, हृदय एवं गुर्दे आदि जैसी गम्भीर बीमारियां लगातार बढ़ती जा रही है। इन गम्भीर बीमारियों से बचने के लिए भोजन

में मोटे अनाज का प्रयोग करना होगा। इसी क्रम में उन्होने कहा कि जब मनुष्य का आहार प्रकृति सुसंगत होगा तभी आरोग्य भारत का निर्माण किया जा सकता है।

केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि मोटे अनाज के क्षेत्र में भारत के पास बेहतर अवसर है क्योंकि यहाँ इनकी पर्याप्त जैवविविधता विद्यमान है और मोटे अनाज के कृषिवानिकी मॉडल विकसित करने के साथ ही इनसे बनने वाले भोज्य उत्पादों का निर्माण और मूल्य वर्धन किये जाने की आवश्यकता है, जिससे किसानों और उद्यमियों दोनों को लाभ होगा।

विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो0 (डा0) जी0एस0 तोमर ने बताया कि सरकार ने वर्ष 2023 को इण्टरनेशनल मिलेट ईयर घोषित किया है। उन्होने यह भी बताया कि बढ़ती आबादी खासतौर पर युवाओं बच्चों को पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने और मधुमेह, कैंसर, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों की रोकथाम में मोटे अनाजों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अनीता तोमर ने बताया कि ज्वार–बाजरा, रागी व मक्का जैसे महत्वपूर्ण अनाज गर्भवती महिला को देने से उसमें रक्तचाप एवं प्री–एकलैंपशिया की घटना में कमी आती है और गर्भावस्था में बाहर से आयरन एवं कैल्शियम देने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसी क्रम में उन्होने कृषिवानिकी के माध्यम से औषधीय पादपों की पैदावार को बढ़ाकर आयुर्वेद तथा पर्यावरण को बढ़ावा देने पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 कुमुद दूबे ने कहा कि प्राचीन काल से ही मिलेट्स एग्रीकल्चर एवं सिविलाइजेशन का हिस्सा रहे हैं हम सबको मिलकर इस जन–आन्दोलन को बढ़ाना है देश के लोगों में मिलेट्स के प्रति जागरूकता लाना है।

क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी प्रयागराज डा0 शारदा प्रसाद ने आयुर्वेद में मिलेट्स के विषय में विस्तार से बताते हुए कहा कि कोरोना काल ने हमे अपनी जड़ों से जोड़ा है अतएव आज जनमानस में मिलेट्स के औषधीय गुणों को बताना आवश्यक हो गया है, जैसा कि आधुनिकीकरण ने हमें मोटे अनाज से दूर किया है पर आज मोटे अनाज की डिमाण्ड बढ़ रही है। डा0 के0 डी0 पाण्डेय ने मोटे अनाज के लाभ से अवगत कराते हुए कहा कि गेहूँ व चावल की तुलना में मोटे अनाज सस्ते होते हैं, इनमें भरपूर मात्रा में पोषक तत्व मौजूद होते हैं और इनके प्रयोग से पाचन तंत्र भी दुरुस्त रहता है।

विशिष्ट अतिथि माँ शारदा हॉस्पिटल के निदेशक डा0 आर0 के0 अग्रवाल ने बताया कि गेहूँ और चावल की तुलना में मोटे अनाजों में मिनरल्स, विटामिंस और फाइबर अधिक मात्रा में पाया जाता है। मोटे अनाज में बीटा कैरोटीन, नियासिन विटामिन–बी6, फोलिक एसिड पोटैशियम, मैग्नीशियम जिंक आदि खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। मोटे अनाजों में ज्वार–बाजरा, रागी, कोदो, सांवा आदि शामिल हैं।

आर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने वाले प्रगतिशील कृषक बी0डी0 सिंह ने कहा कि भारत में लगभग 17 मिलियन हेक्टेअर में मोटा अनाज उगाया जाता है जो कि 18 मिलियन के वार्षिक उत्पादन के साथ देश के सकल अन्य भण्डार का 10 प्रतिशत है। डा0 अवनीश पाण्डेय ने बताया कि आज पूरा विश्व मोटे अनाज की ओर लौट रहा हैं हम यह प्रण करें कि अपनी पसन्द, बजट एवं उपलब्धता के आधार पर अनाज उपभोग का 25 मोटा अनाज सेवन करें। डा0 श्वेता सिंह, आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी ने मिलेट्स पर चर्चा करते हुए इसको नयी पीढ़ी के संज्ञान में लाने का आह्वान किया साथ ही बताया कि आज मोटे अनाज का दिन लौट आया है गरीबों की थाली का भोजन यानी मोटा अनाज बढ़िया पैकेट में बन्द होकर मॉल एवं किराना स्टोर पर प्रीमियम कीमतों पर बिक रहे हैं।

डा0 राजेश मौर्य, डा0 गोविन्द राम पयासी, डा0 भरत नायक, डा0 बी0एस0 रघुवंशी, डा0 खुशनुमा परवीन, डा0 दीपक सोनी ने अपने–अपने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन डा0

राजेन्द्र कुमार तथा कार्यक्रम का संचालन डा0 अवनीश पाण्डेय, प्रभारी चिकित्साधिकारी, प्रतापगढ़ द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में पारि–पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डा0 एस0 डी0 शुक्ला व विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोध अध्येता तथा आयुर्वेद, एलोपैथ एवं यूनानी औषधि जगत के विशेषज्ञों के साथ प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आये हुए कल्पवासी एवं श्रद्धालु आदि मौजूद रहे।

'रोगों से बचना है तो मोटे अनाज का करें सेवन'

मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य विषय पर हुई संगोष्ठी में विशेषज्ञों ने रखे विचार

prayagraj@inext.co.in

PRAYAGRAJ (16 Jan): माघ मेला में काली मार्ग स्थित राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में सोमवार को 'मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ. आयुर्वेद विभाग उत्तर प्रदेश, विश्व आयुर्वेद मिशन एवं पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में लोगों को मोटे अनाज के विषय में जागरूक किया गया. भगवान धन्वंतरि की चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ.

● मोटे अनाज पर संगोष्ठी में चीफ गेस्ट का पौधा भेंटकर किया गया स्वागत.

मोटे अनाज में औषधीय गुण

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि प्रोफेसर जीसी त्रिपाठी अध्यक्ष उच्च शिक्षा परिषद ने कहा कि भोजन में खनिज लवण एवं डाइटरी फाइबर की अपर्याप्त मात्रा के कारण ही मधुमेह, उच्च रक्तचाप एवं गुर्दे की बीमारी लगातार बढ़ रही है. मोटे अनाज में मौजूद पोषण एवं औषधीय गुणों के आधार पर इन्हें भविष्य के भोजन के रूप में देखा जा रहा है.

विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो (डॉ) जी एस तोमर ने बताया कि जीवन शैली संबंधित रोगों से बचाव, खाद्य सुरक्षा और पोषण की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है . सरकार ने इस वर्ष को इंटरनेशनल मिलेट ईयर घोषित किया है. बढ़ती आबादी खासतौर पर युवाओं व बच्चों को पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में मोटे अनाजों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है.

किसानों को मिलेगा लाभ

पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के निदेशक डॉ संजय सिंह ने कहा किमोटे अनाज के क्षेत्र में भारत के पास बेहतर अवसर है. क्यों कि यहां इनकी पर्याप्त जैवविविधता विद्यमान है. क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डॉ शारदा प्रसाद ने आयुर्वेद में मिलेट्स के विषय में विस्तार से बताया. डॉ केडी पांडेय ने भी मोटे अनाज के प्रयोग पर जोर दिया. विशिष्ट अतिथि मा शारदा हॉस्पिटल के निदेशक डॉ आर के अग्रवाल ने कहा कि गेहूं और चावल की तुलना में मोटे अनाजों में मिनरल्स विटामिंस एंड फाइबर अधिक मात्रा में पाया जाता है. वैज्ञानिक डॉ अनीता तोमर, डॉ अवनीश पाण्डेय, डॉ कुमुद दूबे, डॉ श्वेता सिंह ने कहा कि मोटे अनाज का दिन लौट आया है. डॉ राजेश मौर्य, डॉ गोविंद राम पयासी, डॉ भरत नायक, डॉ बी एस रघुवंशी, ड खुशनुमा परवीन, डॉ दीपक सोनी ने अपने विचार रखे. धन्यवाद ज्ञापन डॉ राजेन्द्र कुमार एवं कार्यक्रम का संचालन डॉ अवनीश पाण्डेय ने किया. कार्यक्रम में डॉ आरके सिंह, डॉ रविंद्र सिंह, डॉ एसडी शुक्ला, डॉ सुमन, डॉ अशोक कुशवाहा, डॉ किरण कुमार मौर्य, डॉ जयप्रकाश, डॉ अशोक प्रियदर्शी डॉ हेमंत सिंह, डा भरत नायक, डा खुशनुमा परवीन, डॉ ज्योतिर्मय, डॉ अमित पाण्डेय, डॉ राजेंद्र कुमार डॉ दीपक सोनी डॉ राजेश मौर्य, अनुराग अस्थाना आदि मौजूद रहे.

****

SEMINAR ON MILLETS AND OUR HEALTH

Use coarse grains in food to prevent diseases: Prof GC Tripathi

JE CORRESPONDENT

PRAYAGRAJ: A scientific seminar on the subject of "Millets and Our Health" was organized on Monday, January 16, at the Government Ayurvedic Hospital, Kali Marg, Magh Mela.

The year 2023 is being celebrated as the International Year of Millets.

Through this program organized under the joint aegis of Ayurveda Department Uttar Pradesh, World Ayurveda Mission and Forest Research Center for Eco Rehabilitation Prayagraj and participation of Jhandu Emami Group, people were made aware about coarse grains. The program started with garlanding and lighting the lamp on the picture of Lord Dhanvantari.

Inaugurating the program, Chief Guest Professor GC Tripathi, Chairman Higher Education Council, Uttar Pradesh said that diabetes, anemia, high blood pressure, calcium deficiency, heart and kidney diseases are continuously increasing due to insufficient amount of mineral salts and dietary fiber in food. Based on the nutritional and medicinal properties present in millets, they are being seen as the food of the future.

Prof. (Dr.) GS Tomar, President, Vishwa Ayurveda Mission, said that prevention of lifestyle related diseases, food security and nutrition is very important. The government has declared this year as International Millet Year. Millets can play an important role in meeting the nutritional requirements of the growing population, especially youth and children, and in the prevention of lifestyle diseases such as diabetes, cancer, heart disease, hypertension, etc.

Dr. Sanjay Singh, director of Pari Restoration Forest Research Center, Prayagraj, said that

India has a better opportunity in the field of millets because it has sufficient biodiversity. Along with developing agroforestry model of millets, there is a need to manufacture food products and add value to them, which will benefit both farmers and entrepreneurs. Will happen.

Regional Ayurvedic and Unani Officer Prayagraj Dr. Sharda Prasad said that Ayurveda has been explained in detail about millets. Today it has become necessary to tell the medicinal properties of millets in

public. The Corona period has connected us to our roots. Modernization has We have been removed from coarse grains, but today the demand for coarse grains is increasing.

Explaining in detail about the benefits of coarse grains, Dr. KD Pandey said that coarse grains are cheaper as compared to wheat and rice, nutrients are present in abundance in them. By using them, the digestive system also remains healthy. Dr. RK Aggarwal, director of Maa Sharda Hospital, a special guest, told that

Compared to wheat and rice, minerals, vitamins and fiber are found in abundance in coarse grains. Beta carotene, niacin, vitamin B6, folic acid, potassium, magnesium, zinc, etc. are found in abundance in coarse grains. Coarse cereals include jowar, bajra, ragi, kodo, sama, etc.

Mr. BD Singh, a progressive agriculturist who promotes organic farming, said that millets are grown in about 17 million hectares in India, which is 10% of the country's gross other reserves with an annual production of 18 million. Scientist Dr. Anita Tomar told that

Giving important grains like jowar, millet, ragi and maize to a pregnant woman reduces blood pressure and the incidence of pre-eclampsia. There is no need to give iron and calcium from outside during pregnancy.

Dr. Avneesh Pandey told that today the whole world is returning to coarse grains. Let us take a pledge that on the basis of our choice, budget and availability, 25% of our consumption of cereals should be taken as coarse cereals.

Dr. Kumud Dubey said that millets have been a part of agriculture, culture and civilization since ancient times.

Dr. Shweta Singh said that we have to give information about millets to the new generation.

वैज्ञानिक संगोष्ठी : मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य

कृषिवानिकी द्वारा औषधीय पादपों की पैदावार को बढ़ाकर आयुर्वेद को बढ़ावा मिल सकता है-डॉ0 अनिता तोमर

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज, माघमेला क्षेत्र में काली मार्ग पर सेक्टर-4 में स्थित राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत पारि - पुर्नस्थापन वन अनुसन्धान केन्द्र तथा विश्व आयुर्वेद मिशन द्वारा मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य विषय पर एक दिवसीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत आयुर्वेद जगत के प्रणेता तथा वैद्यक शास्त्र के देवता भगवान धन्वन्तरि की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित करके हुआ। मुख्य अतिथि डॉ0 जी0सी0 त्रिपाठी, अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद, उ0 प्र0 ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब मनुष्य का आहार प्रकृति सुसंगत होगा तभी आरोग्य भारत का निर्माण किया जा सकता है। सम्मानित वक्ता प्रो0 (डॉ0) जी0 एस0 तोमर, राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ गुरु, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए दैनिक जीवन में आयुर्वेद को बढ़ावा देने पर जोर दिया। केन्द्र प्रमुख डॉ0 संजय सिंह ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि मोटे अनाज के क्षेत्र में भारत के पास बेहतर अवसर है क्योंकि यहाँ इनकी पर्याप्त जैवविविधता विद्यमान है और मोटे अनाज के कृषिवानिकी मॉडल विकसित करने के साथ ही इनसे बनने वाले भोज्य उत्पादों का निर्माण और मूल्य वर्धन किये जाने की आवश्यकता है, जिससे किसानों और उद्यमियों दोनों को लाभ होगा। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 अनिता तोमर ने कृषिवानिकी द्वारा औषधीय पादपों की पैदावार को बढ़ाकर आयुर्वेद को बढ़ावा देने पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 कुमुद दूबे ने कार्यक्रम विषयक विभिन्न खाद्य पदार्थों के उपयोग पर बल दिया। डॉ0 राजेश मौर्या ने स्वस्थ आहार पर विस्तृत चर्चा किया। प्रो0 के0 डी0 पाण्डेय, पूर्व विभागाध्यक्ष, द्रव्यगुण, राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, हंडिया, प्रयागराज ने भारतीय मिलेट्स से अवगत कराया। डॉ0 श्वेता सिंह, आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी ने मिलेट्स पर चर्चा करते हुए इसको नयी पीढ़ी के संज्ञान में लाने का आह्वान किया।

वैज्ञानिक संगोष्ठी : मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य

प्रयागराज। माघमेला क्षेत्र में काली मार्ग पर सेक्टर-4 में स्थित राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत पारि - पुर्नस्थापन वन अनुसन्धान केन्द्र तथा विश्व आयुर्वेद मिशन द्वारा मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य विषय पर एक दिवसीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत आयुर्वेद जगत के प्रणेता तथा वैद्यक शास्त्र के देवता भगवान धन्वन्तरि की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित करके हुआ। मुख्य अतिथि डॉ0 जी0सी0 त्रिपाठी, अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद, उ0 प्र0 ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब मनुष्य का आहार प्रकृति सुसंगत होगा तभी आरोग्य भारत का निर्माण किया जा सकता है। सम्मानित वक्ता प्रो0 (डॉ0) जी0 एस0 तोमर, राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ गुरु, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए दैनिक जीवन में आयुर्वेद को बढ़ावा देने पर जोर दिया। केन्द्र प्रमुख डॉ0 संजय सिंह ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि मोटे अनाज के क्षेत्र में भारत के पास बेहतर अवसर है क्योंकि यहाँ इनकी पर्याप्त जैवविविधता विद्यमान है और मोटे अनाज के कृषिवानिकी मॉडल विकसित करने के साथ ही इनसे बनने वाले भोज्य उत्पादों का निर्माण और मूल्य वर्धन किये जाने की आवश्यकता है, जिससे किसानों और उद्यमियों दोनों को लाभ होगा। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 अनिता तोमर ने कृषिवानिकी द्वारा औषधीय पादपों की पैदावार को बढ़ाकर आयुर्वेद को बढ़ावा देने पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 कुमुद दूबे ने कार्यक्रम विषयक विभिन्न खाद्य पदार्थों के उपयोग पर बल दिया। डॉ0 राजेश मौर्या ने स्वस्थ आहार पर विस्तृत चर्चा किया। प्रो0 के0 डी0 पाण्डेय, पूर्व विभागाध्यक्ष, द्रव्यगुण, राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, हंडिया, प्रयागराज ने भारतीय मिलेट्स से अवगत कराया। डॉ0 श्वेता सिंह, आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी ने मिलेट्स पर चर्चा करते हुए इसको नयी पीढ़ी के संज्ञान में लाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का सफल आयोजन डॉ0 शारदा प्रसाद के नेतृत्व में डॉ0 राजेंद्र कुमार तथा डॉ0 अवनीश पाण्डेय, प्रभारी चिकित्साधिकारी, प्रतापगढ़ के प्रयास से संपन्न हुआ। कार्यक्रम में पारि - पुर्नस्थापन वन अनुसन्धान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ0 एस0 डी0 शुक्ला, प्रगतिशील किसान बी0 डी0 सिंह के साथ आयुर्वेद जगत से जुड़े हुए विभिन्न वक्ता आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान

मोटे अनाज का आहार होता है पौष्टिक

संगोष्ठी

- विशेषज्ञों ने स्वास्थ्य वर्धक अनाज को बढ़ाने का किया आह्वान
- वक्ता बोले, मोटे अनाज के क्षेत्र में भारत के पास बेहतर अवसर

प्रयागराज, प्रमुख संवाददाता। मोटा अनाज मनुष्य को तंदरुस्त बनाएगा। मोटे अनाज का उत्पादन बढ़ाने के प्रति गंभीर होने की जरूरत है। इसका उत्पादन बढ़ने से आरोग्य भारत का निर्माण किया जा सकता है। मोटे अनाज पर माघ मेला क्षेत्र के काली मार्ग स्थित सेक्टर-4 स्थित राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय में सोमवार को आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत पारि-पुर्नस्थापन वन अनुसंधान केंद्र तथा विश्व आयुर्वेद मिशन की ओर से आयोजित संगोष्ठी में विशेषज्ञों ने अपने-अपने विचार रखे।

मुख्य अतिथि डॉ जीसी त्रिपाठी ने (अध्यक्ष उच्च शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश) ने कहा कि मनुष्य का आहार प्रकृति सुसंगत होगा, तभी आरोग्य भारत का निर्माण किया जा सकता है। प्रो. (डॉ) जीएस तोमर (राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ गुरु, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार) ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए दैनिक जीवन में आयुर्वेद को बढ़ावा देने पर जोर दिया। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि मोटे अनाज के क्षेत्र में भारत के पास बेहतर अवसर है, क्योंकि यहां इनकी पर्याप्त जैव विविधता है।

केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनिता तोमर ने कृषि वानिकी के जरिए औषधीय पादपों की पैदावार को बढ़ाकर आयुर्वेद को बढ़ावा देने पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे ने विभिन्न खाद्य पदार्थों के उपयोग पर जानकारी दी। डॉ. राजेश मौर्या ने स्वस्थ आहार पर अपने विचार रखे। प्रो. केडी पांडेय (पूर्व विभागाध्यक्ष द्रव्यगुण राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय हंडिया) ने भारतीय मिलेट्स के बारे में जानकारी दी। डॉ. श्वेता सिंह, (आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी) ने मिलेट्स पर चर्चा करते हुए इसको नयी पीढ़ी के संज्ञान में लाने का आह्वान किया। डॉ. राजेंद्र कुमार तथा डॉ. अवनीश पांडेय, प्रभारी चिकित्साधिकारी प्रतापगढ़ ने मोटो अनाज पर तमाम जानकारी दी। संगोष्ठी में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एसडी शुक्ला, प्रगतिशील किसान बीडी सिंह के साथ आयुर्वेद जगत से कई वक्ता मौजूद रहे।

बीमारियों से बचाव के लिए भोजन में करें मोटे अनाज का प्रयोग- डॉ जी सी त्रिपाठी

प्रयागराज।"मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य" विषय पर वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन सोमवार को माघ मेला में काली मार्ग स्थित राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में किया गया। वर्ष 2023 इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स के रूप में मनाया जा रहा है।

आयुर्वेद विभाग उत्तर प्रदेश, विश्व आयुर्वेद मिशन एवं पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को मोटे अनाज के विषय में जागरूक किया गया। भगवान धन्वंतरि की चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि प्रोफेसर जी सी त्रिपाठी अध्यक्ष उच्च शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश ने कहा कि भोजन में खनिज लवण एवं डाइटरी फाइबर की अपर्याप्त मात्रा के कारण ही मधुमेह एनीमिया उच्च रक्तचाप कैल्शियम की कमी हृदय एवं गुर्दे की बीमारी लगातार बढ़ रही है। मोटे अनाज में मौजूद पोषण एवं औषधीय गुणों के आधार पर इन्हें भविष्य के भोजन के रूप में देखा जा रहा है।

विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो (डॉ) जी एस तोमर ने बताया कि जीवन शैली संबंधित रोगों से बचाव, खाद्य सुरक्षा और पोषण की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। सरकार ने इस वर्ष को इंटरनेशनल मिलेट ईयर घोषित किया है। बढ़ती आबादी खासतौर पर युवाओं व बच्चों को पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने और मधुमेह कैंसर हृदय रोग उच्च रक्तचाप आदि जीवन शैली से संबंधित बीमारियों की रोकथाम में मोटे अनाजों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के निदेशक डॉ संजय सिंह ने कहा कि मोटे अनाज के क्षेत्र में भारत के पास बेहतर अवसर है क्योंकि यहां इनकी पर्याप्त जैवविविधता विद्यमान है।मोटे अनाज के कृषिवानिकी मॉडल विकसित करने के साथ इनसे बनने वाले भोज्य उत्पादों का निर्माण और मूल्य वर्धन किये जाने की आवश्यकता है जिससे किसानों और उद्यमियों दोनों को लाभ होगा

क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी प्रयागराज डॉ शारदा प्रसाद ने कहा कि आयुर्वेद में मिलेट्स के विषय में विस्तार से बताया गया है।आज जनमानस में मिलेट्स के औषधीय गुणों को बताना आवश्यक हो गया है।कोरोना काल ने हमें अपनी जड़ों से जोड़ा है।आधुनिकीकरण ने हमें मोटे अनाज से दूर किया है पर आज मोटे अनाज की डिमांड बढ़ रही है। मोटे अनाज के फायदे के विषय में विस्तार पूर्वक बताते हुए डॉ केडी पांडेय ने कहा कि गेहूं व चावल की तुलना में मोटे अनाज सस्ते होते हैं इनमें भरपूर मात्रा में पोषक तत्व मौजूद होते हैं। इनके प्रयोग से पाचन तंत्र भी दुरुस्त रहता है। विशिष्ट अतिथि मां शारदा हॉस्पिटल के निदेशक डॉ आर के अग्रवाल ने बताया कि गेहूं और चावल की तुलना में मोटे अनाजों में मिनरल्स विटामिन्स एंड फाइबर अधिक मात्रा में पाया जाता है मोटे अनाज में बीटा कैरोटीन, नियासिन विटामिन B6 फोलिक एसिड पोटैशियम मैग्नीशियम जिंक आदि खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। मोटे अनाजों में ज्वार बाजरा रागी कोदो सामा आदि शामिल हैं।

आर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने वाले प्रगतिशील कृषक श्री बी डी सिंह ने कहा कि भारत में लगभग 17 मिलियन हेक्टेयर में मोटा अनाज उगाया जाता है जो कि 18 मिलियन के वार्षिक उत्पादन के साथ देश के सकल अन्न भंडार का 10% है।

मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य विषय पर एक दिवसीय वैज्ञानिक संगोष्ठी संपन्न

मुख्य संवाददाता

प्रयागराज। माघमेला क्षेत्र में काली मार्ग पर सेक्टर-4 में स्थित राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत पारि - पुर्नस्थापन वन अनुसन्धान केन्द्र तथा विश्व आयुर्वेद मिशन द्वारा मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य विषय पर एक दिवसीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत आयुर्वेद जगत के प्रणेता तथा वैद्यक शास्त्र के देवता भगवान धन्वन्तरि की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित करके हुआ। मुख्य अतिथि डॉ0 जी0सी0 त्रिपाठी, अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद, उ0 प्र0 ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब मनुष्य का आहार प्रकृति सुसंगत होगा तभी आरोग्य भारत का निर्माण किया जा सकता है। सम्मानित वक्ता प्रो0 (डॉ0) जी0 एस0 तोमर, राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ गुरु, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए दैनिक जीवन में आयुर्वेद को बढ़ावा देने पर जोर दिया। केन्द्र प्रमुख डॉ0 संजय सिंह ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि मोटे अनाज के क्षेत्र में भारत के पास बेहतर अवसर है क्योंकि यहाँ इनकी पर्याप्त जैवविविधता विद्यमान है और मोटे अनाज के कृषिवानिकी मॉडल विकसित करने के साथ ही इनसे बनने वाले भोज्य उत्पादों का निर्माण और मूल्य वर्धन किये जाने की आवश्यकता है, जिससे किसानों और उद्यमियों दोनों को लाभ होगा। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 अनिता तोमर ने कृषिवानिकी द्वारा औषधीय पादपों की पैदावार को बढ़ाकर आयुर्वेद को बढ़ावा देने पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ0 कुमुद दूबे ने कार्यक्रम विषयक विभिन्न खाद्य पदार्थों के उपयोग पर बल दिया। डॉ0 राजेश मौर्या ने स्वस्थ आहार पर विस्तृत चर्चा किया। प्रो0 के0 डी0 पाण्डेय, पूर्व विभागाध्यक्ष, द्रव्यगुण,राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, हंडिया, प्रयागराज ने भारतीय मिलेट्स से अवगत कराया। डॉ0 श्वेता सिंह, आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी ने मिलेट्स पर चर्चा करते हुए इसको नयी पीढ़ी के संज्ञान में लाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का सफल आयोजन डॉ0 शारदा प्रसाद के नेतृत्व में डॉ0 राजेंद्र कुमार तथा डॉ0 अवनीश पाण्डेय, प्रभारी चिकित्साधिकारी, प्रतापगढ़ के प्रयास से संपन्न हुआ। कार्यक्रम में पारि - पुर्नस्थापन वन अनुसन्धान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव, प्रगतिशील किसान बी0 डी0 सिंह के साथ आयुर्वेद जगत से जुड़े हुए विभिन्न वक्ता आदि मौजूद थे।

संस्करण : मुम्बई
वर्ष : 08
अंक : 11
पृष्ठ : 8
मूल्य : 2.00
मंगलवार, 17 जनवरी, 2023

मंत्र भारत

हिन्दी दैनिक
मुम्बई, प्रयागराज एवं लखनऊ से एक साथ प्रकाशित
कार्यकारी सम्पादक - योगेन्द्र चौधरी

दिनांक- 17.01.2023 संस्करण मुम्बई
Website : www.mantrabharat.com

मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य विषय पर संगोष्ठी

बीमारियों से बचाव के लिए भोजन में करें मोटे अनाज का प्रयोग- डॉ जी सी त्रिपाठी

प्रयागराज। 'मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्य' विषय पर वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन सोमवार 16 जनवरी को माघ मेला में काली मार्ग स्थित राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में किया गया। वर्ष 2023 इंटरनेशनल इयर ऑफ मिलेट्स के रूप मे मनाया जा रहा है। आयुर्वेद विभाग उत्तर प्रदेश, विश्व आयुर्वेद मिशन एवं पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान एवं इंदु इमामी समूह की सहभागिता में आयोजित इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को मोटे अनाज के विषय मे जागरूक किया गया। भगवान धन्वंतरि की चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि प्रोफेसर जी सी त्रिपाठी अध्यक्ष उच्च शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश ने कहा कि भोजन मे खनिज लवण एवं डाइटरी फाइबर की अपर्याप्त मात्रा के कारण ही मधुमेह एनीमिया उच्च रक्तचाप कैल्शियम की कमी ह्रदय एवं गुर्दे की बीमारी लगातार बढ़ रही है। मोटे अनाज मे मौजूद पोषण एवं औषधीय गुणों के आधार पर इन्हें भविष्य के भोजन के रूप मे देखा जा रहा है।

विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो (डॉ) जी एस तोमर ने बताया कि जीवन शैली संबंधित रोगों से बचाव, खादय सुरक्षा और पोषण की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। सरकार ने इस वर्ष को इंटरनेशनल मिलेट इयर घोषित किया है। बढ़ती आबादी खासतौर पर युवाओं व बच्चों को पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने और मधुमेह कैंसर ह्रदय रोग उच्च रक्तचाप आदि जीवन शैली से संबंधित बीमारियों की रोकथाम मे मोटे अनाजों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के निदेशक डॉ संजय सिंह ने कहा कि मोटे अनाज के क्षेत्र मे भारत के पास बेहतर अवसर है क्यूँकि यहाँ इनकी पर्याप्त जैवविविधता विद्यमान है।मोटे अनाज के कृषिवानिकी मॉडल विकसित करने के साथ इनसे बनने वाले भोज्य उत्पादों का निर्माण और मूल्य वर्धन किये जाने की आवश्यकता है जिससे किसानों और उद्यमियों दोनों को लाभ होगा। क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी प्रयागराज डॉ शारदा प्रसाद ने कहा कि आयुर्वेद मे मिलेट्स के विषय मे विस्तार से बताया गया है।आज जनमानस मे मिलेट्स के औषधीय गुणों को बताना आवश्यक हो गया है।कोरोना काल ने हमे अपनी जड़ो से जोड़ा है।आधुनिकीकरण ने हमे मोटे अनाज से दूर किया है पर आज मोटे अनाज की डिमांड बढ़ रही है।

मोटे अनाज के फायदे के विषय मे विस्तार पूर्वक बताते हुए डॉ केडी पांडेय ने कहा कि गेहूं व चावल की तुलना मे मोटे अनाज सस्ते होते है इनमे भरपूर मात्रा मे पोषक तत्व मौजूद होते है। इनके प्रयोग से पाचन तंत्र भी दुरुस्त रहता है। विशिष्ट अतिथि मा शारदा हॉस्पिटल के निदेशक डॉ आर के अग्रवाल ने बताया कि

गेहूं और चावल की तुलना मे मोटे अनाजों मे मिनरल्स विटामिंस एंड फाइबर अधिक मात्रा मे पाया जाता है मोटे अनाज मे बीटा कैरोटीन, नियासिन विटामिन 6 फोलिक एसिड पोटैशियम मैग्निशियम जिंक आदि खनिज प्रचुर मात्रा मे पाए जाते है। मोटे अनाजों मे ज्वार बाजरा रागी कोदो सामा आदि शामिल है।

आर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने वाले प्रगतिशील कृषक श्री बी डी सिंह ने कहा कि भारत मे लगभग 17 मिलियन हेक्टेयर मे मोटा अनाज उगाया जाता है जो कि 18 मिलियन के वार्षिक उत्पादन के साथ देश के सकल अन्य भंडार का 10% है। वैज्ञानिक डॉ अनीता तोमर ने बताया कि

ज्वार बाजरा रागी व मक्का जैसे महत्वपूर्ण अनाज गर्भवती महिला को देने से उसमे रक्तचाप एवं प्री एकलैंपशिया की घटना मे कमी आती है। गर्भावस्था मे बाहर से आयरन एवं कैल्शियम देने की आवश्यकता नही पड़ती है।

डॉ अवनीश पाण्डेय ने बताया कि आज पूरा विश्व मोटे अनाज की ओर लौट रहा है। हम यह प्रण करें कि अपनी पसंद, बजट एवं उपलब्धता के आधार पर अनाज उपभोग का 25% मोटा अनाज सेवन करें।

डॉ कुमुद दूबे ने कहा कि प्राचीन काल से ही मेलेट्स एग्रीकल्चर, कल्चर एवं सिविलाइजेशन का हिस्सा रहे है हम सबको मिलकर इस जन आंदोलन को बढ़ाना है देश के लोगों मे मिलेट्स के प्रति जागरूकता लाना है।

डॉ श्वेता सिंह ने कहा कि हमे नई पीढ़ी को मिलेट्स की जानकारी देना होगा।

आज मोटे अनाज का दिन लौट आया है गरीबो की थाली का भोजन यानी मोटा अनाज बढ़िया पैकेट मे बंद होकर मॉल एवं किराना स्टोर पर प्रीमियम कीमतो पर बिक रहे है।

डॉ राजेश मौर्य, डॉ गोविंद राम पयासी, डॉ भरत नायक, डॉ बी एस रघुवंशी, डा खुशनुमा परवीन, डॉ दीपक सोनी ने अपने विचार रखे।धन्यवाद ज्ञापन डॉ राजेन्द्र कुमार एवं कार्यक्रम का संचालन डॉ अवनीश पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम मे डॉ आर के सिंह डॉ रविंद्र सिंह डॉ एसडी शुक्ला डॉ सुमन डॉ अशोक कुशवाहा डॉ किरण कुमार मौर्य डॉ जयप्रकाश डॉ अशोक प्रियदर्शी डॉ हेमंत सिंह, डा भरत नायक, डा खुशनुमा परवीन, डॉ ज्योतिर्मय, डॉ अमित पाण्डेय, डॉ राजेंद्र कुमार डॉ दीपक सोनी डॉ राजेश मौर्य, अनुराग अस्थाना, मुक्तेश शुक्ल, डॉ आशीष कुमार, निशांत, डॉ शशांक द्विवेदी, सतीश चंद्र दुबे, कल्पवासी एवं श्रद्धालु मौजूद रहे।

बीमारियों से बचाव के लिए भोजन में करें मोटे अनाज का प्रयोग– डॉ जी सी त्रिपाठी

प्रयागराज। सोमवार को माघ मेला में काली मार्ग स्थित राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में ष्मोटा अनाज एवं हमारा स्वास्थ्यष् विषय पर वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजित की गई। वर्ष 2023 इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स के रूप में मनाया जा रहा है। आयुर्वेद विभाग उत्तर प्रदेश, विश्व आयुर्वेद मिशन एवं पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को मोटे अनाज के विषय में जागरूक किया गया। भगवान धन्वंतरि की चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि प्रोफेसर जी सी त्रिपाठी अध्यक्ष उच्च शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश ने कहा कि भोजन में खनिज लवण एवं डाइटरी फाइबर की अपर्याप्त मात्रा के कारण ही मधुमेह एनीमिया उच्च रक्तचाप कैल्शियम की कमी ह्रदय एवं गुर्दे की बीमारी लगातार बढ़ रही है। मोटे अनाज में मौजूद पोषण एवं औषधीय गुणों के आधार पर इन्हें भविष्य के भोजन के रूप में देखा जा रहा है। विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो (डॉ) जी एस तोमर ने बताया कि जीवन शैली संबंधित रोगों से बचाव, खाद्य सुरक्षा और पोषण की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है । सरकार ने इस वर्ष को इंटरनेशनल मिलेट ईयर घोषित किया है । बढ़ती आबादी खासतौर पर युवाओं व बच्चों को पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने और मधुमेह कैंसर ह्रदय रोग उच्च रक्तचाप आदि जीवन शैली से संबंधित बीमारियों की रोकथाम में मोटे अनाजों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के निदेशक डॉ संजय सिंह ने कहा कि मोटे

अनाज के क्षेत्र में भारत के पास बेहतर अवसर है क्यूँकि यहाँ इनकी पर्याप्त जैवविविधता विद्यमान है।मोटे अनाज के कृषिवानिकी मॉडल विकसित करने के साथ इनसे बनने वाले भोज्य उत्पादों का निर्माण और मूल्य वर्धन किये जाने की आवश्यकता है जिससे किसानों और उद्यमियों दोनों को लाभ होगा। क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी प्रयागराज डॉ शारदा प्रसाद ने कहा कि आयुर्वेद में मिलेट्स के विषय मे विस्तार से बताया गया है।आज जनमानस में मिलेट्स के औषधीय गुणों को बताना आवश्यक हो गया है।कोरोना काल ने हमे अपनी जड़ों से जोड़ा है।आधुनिकीकरण ने हमे मोटे अनाज से दूर किया है पर आज मोटे अनाज की डिमांड बढ़ रही है। मोटे अनाज के फायदे के विषय में विस्तार पूर्वक बताते हुए डॉ केडी पांडेय ने कहा कि गेहूं व चावल की तुलना में मोटे अनाज सस्ते होते हैं इनमें भरपूर मात्रा में पोषक तत्व मौजूद होते हैं। इनके प्रयोग से पाचन तंत्र भी दुरुस्त रहता है। विशिष्ट अतिथि मा शारदा हॉस्पिटल के निदेशक डॉ आर के अग्रवाल ने बताया कि गेहूं और चावल की तुलना में मोटे अनाजों में मिनरल्स विटामिंस एंड फाइबर अधिक मात्रा में पाया जाता है आदि शामिल हैं। आर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने वाले प्रगतिशील कृषक बी डी सिंह ने कहा कि भारत में लगभग 17 मिलियन हेक्टेयर में मोटा अनाज उगाया जाता है जो कि 18 मिलियन के वार्षिक उत्पादन के साथ देश के सकल अन्य भंडार का 10: है। वैज्ञानिक डॉ अनीता तोमर ने बताया कि ज्वार बाजरा रागी व मक्का जैसे महत्वपूर्ण अनाज गर्भवती महिला को देने से उसमें रक्तचाप एवं प्री एकलैंपशिया की घटना में कमी आती है। गर्भावस्था में बाहर से आयरन एवं कैल्शियम देने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। डॉ अवनीश पाण्डेय ने बताया कि आज पूरा विश्व मोटे अनाज की ओर लौट रहा है। हम यह प्रण करें कि अपनी पसंद, बजट एवं उपलब्धता के आधार पर अनाज उपभोग का 25: मोटा अनाज सेवन करें। डॉ कुमुद दूबे ने कहा कि प्राचीन काल से ही मेलेट्स एग्रीकल्चर, कल्चर एवं सिविलाइजेशन का हिस्सा रहे हैं हम सबको मिलकर इस जन आंदोलन को बढ़ाना है देश के लोगों में मिलेट्स के प्रति जागरूकता लाना है। डॉ श्वेता सिंह ने कहा कि हमे नई पीढ़ी कीमतों पर बिक रहे हैं। डॉ राजेश मौर्य, डॉ गोविंद राम पयासी, डॉ भरत नायक, डॉ बी एस रघुवंशी, डा खुशनुमा परवीन, डॉ दीपक सोनी ने अपने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ राजेन्द्र कुमार एवं कार्यक्रम का संचालन डॉ अवनीश पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम में डॉ आर के सिंह डॉ रविंद्र सिंह डॉ एसडी शुक्ला डॉ सुमन डॉ अशोक कुशवाहा डॉ किरण कुमार मौर्य डॉ जयप्रकाश डॉ अशोक प्रियदर्शी डॉ हेमंत सिंह, डा भरत नायक, डा खुशनुमा परवीन, डॉ ज्योतिर्मय, डॉ अमित पाण्डेय, डॉ राजेंद्र कुमार डॉ दीपक सोनी डॉ राजेश मौर्य, अनुराग अस्थाना, मुक्तेश शुक्ल, डॉ आशीष कुमार, निशांत, डॉ शशांक द्विवेदी, सतीश चंद्र दुबे, कल्पवासी एवं श्रद्धालु मौजूद रहे।

त्कर्ष की मौत से संविधान का चौथा स्तंभ सदमे में।

करछना बना अपराधियों का अड्डा, प्रशासन नाकाम।।
प्रशासन की चुप्पी से बढ़ रहा है अपराधियों का मनोबल।।

ागराज। जिले की करछना तहसील में एक साल में दर्जनों घटनाएं हुई पर प्रशासन किसी भी घटना का पर्दाफाश र सका।

दिसंबर को उत्कर्ष उम्र 18 वर्ष बी टेक छात्र की मौत जहां क्षेत्र की जनता कि दिल दिमाग पर शोक की लहर प्रशासन पर बड़े बड़े सवाल भी खड़े कर रहे है। पंद्रह दिन तक एफ आई आर दर्ज न होना, प्रशासन की लापरवाही ता या मिली भगत की शंका जाहिर कर रहा है । जबकि थानाध्यक्ष, पुलिस कमिश्नर प्रयागराज को मिलकर लिखित दी गई।

हीं एक तरफ अपराधियों का मनोबल बढ़ा रहा है प्रशासन पर जनता की गुपचुप राय यह भी मिल रही है कि भी बिक चुकी है, क्यों कि भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के सैकड़ों खबरों का असर नष्ट होना, पुलिस कमिश्नर श्वासन पर भी पुलिस को हरकत में न आना।जबकि प्रदेश के लगभग दो दर्जन अखबार व इलेक्ट्रॉनिक ,सोसल मीडिया से यह खबर चलीष है कुछ खबरें अन्य राज्य के अखबार व मिडिया ने चलाया है।लाखों लोगों तिक्रिया, संवेदना व विश्वास खंडित होता दिख रहा है।यदि समाज का एक तबका समाज हित में जीवन दान कर उसके साथ प्रशासन की संवेदना या जांच न्याय नहीं तो सामान्य लोगों को तो न्याय की बात सोचना भी कपोल है।यह है तीर्थराज प्रयाग की न्याय व्यवस्था।जो सभी को न्याय दिलाता, आज वह न्याय के लिए दर दर भटक

सुबे के मुखिया ला एंड आर्डर का ढिंढोरा पिटते फिर रहे हैं।वाह रे राम राज्य। मृतक का छाया चित्र देखने से

सम्पादक
सिद्धनाथ द्विवेदी
प्रबन्धक निदेशक
दीपक जयसवाल
सम्पादकीय कार्यालय
11ई/2, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद